११. राष्ट्ररक्षक मराठे

बाजीराव के पश्चात शाहू महाराज ने उसका बेटा बालाजी बाजीराव अर्थात नानासाहेब को पेशवाई के वस्त्र दिए । नादिरशाह के आक्रमण के बाद दिल्ली में अस्थिरता उत्पन्न हो गई थी । इस स्थिति में नानासाहब ने उत्तर में मराठी सत्ता को दृढ़ करने के प्रयास किए । इस कालावधि में अहमदशाह अब्दाली ने पानीपत में मराठों के सम्मुख चुनौती खड़ी की । इस पाठ में हम इन सभी घटनाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

उत्तर में स्थिति : अयोध्या प्रांत की पश्चिमोत्तर दिशा से सटे हिमालय के तलहटीवाले प्रदेश को अठारहवीं शताब्दी में रुहेलखंड कहते थे । अफगानिस्तान से आए हुए पठान इस क्षेत्र में स्थायी रूप में बस गए थे । इन पठानों को रुहेले कहते थे । गंगा-यमुना नदियों के दोआब प्रदेश में इन रुहेलों ने उत्पात मचा रखा था । उनका दमन करने के लिए अयोध्या के नवाब ने मराठों को आमंत्रित किया। मराठों ने रुहलों का दमन किया ।

अफगानों से संघर्ष : अफगानिस्तान का शासक अहमदशाह अब्दाली को भारत की संपत्ति के प्रति आकर्षण था। ई.स.१७५१ में उसने पंजाब पर आक्रमण किया । उस समय मुगल प्रदेश में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हुई थी । फलतः मुगलों को अब्दाली के आक्रमण का भय था । इस स्थिति में मुगलों ने अपनी रक्षा के लिए मराठों से सहायता लेना आवश्यक माना । मुगल शासक को मराठों की सामर्थ्य और ईमानदारी का विश्वास हो गया था । दिल्ली की रक्षा करने के लिए मराठों से बढ़कर किसी भी दूसरी सत्ता में यह सामर्थ्य नहीं थी । अतः मुगल शासक ने ई.स.१७५२ के अप्रैल महीने में मराठों के साथ समझौता किया । इस समझौते के अनुसार मराठों ने रुहेले, जाट, राजपूत, अफगान आदि शत्रुओं से मुगल सत्ता की रक्षा करना स्वीकार किया। उसके बदले में मराठों को नकद राशि मिलनेवाली थी । इसके अतिरिक्त उन्हें पंजाब, मुलतान, राजपूताना, सिंध और रुहेलखंड से चौथ वसूल करने के अधिकार प्राप्त हुए । साथ ही अजमेर और आगरा प्रांतों की सूबेदारी दी गई ।

इस समझौते के अनुसार छत्रपति की ओर से पेशवा ने शिंदे-होळकर की सेनाओं को दिल्ली की रक्षा करने हेतु रवाना किया । मराठे दिल्ली की ओर निकल चुके हैं; यह समाचार प्राप्त होते ही अब्दाली अपने देश को लौट गया । मराठे पड़ाव-दर-पड़ाव पार करते हुए दिल्ली पहुँचे । मराठों के कारण ही अब्दाली का संकट टला; यह मानकर मुगल शासक ने उन्हें मुगल सूबों की चौथ वसूलने का अधिकार दे दिया । इन सूबों में काबुल, कंधार और पेशावर का भी समावेश था । ये सूबे पहले मुगल साम्राज्य के हिस्से थे लेकिन अब वे हिस्से अब्दाली के अफगानिस्तान में थे । समझौते के अनुसार ये सूबे अब्दाली से जीतकर पुनः मुगल साम्राज्य से जोड़ना मराठों का कर्तव्य था । इसके उल्टे; कम-से-कम पंजाब तक का प्रदेश अफगान के अधिकार में लाएँ; यह अब्दाली की इच्छा थी । फलतः आज न सही कल; मराठे और अब्दाली के बीच युद्ध होना अटल था ।

पेशवा नानासाहेब

नानासाहेब पेशवा का भाई रघुनाथ राव जयाप्पा शिंदे और मल्हारराव होळकर को साथ लेकर उत्तर भारत में अब्दाली से युद्ध करने के अभियान पर निकला । उत्तर भारत के स्थानीय सत्ताधारियों के दृष्टिकोण से दक्षिण के मराठे उनके प्रतिस्पर्धी थे ।

मराठों के व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर मराठों की सहायता करने के बजाय वे तटस्थ रहे। दिल्ली दरबार में मराठों का वर्चस्व और हस्तक्षेप उन्हें स्वीकार नहीं था। लेकिन सूरजमल जाट और रानी किशोरी ने पानीपत युद्ध में घायल हुए सैनिकों की सहायता की ।

साथ ही; उत्तर के कुछ कट्टरपंथी मराठों को परधर्मीय के रूप में देखते थे । उन्होंने भी मराठों के इस व्यापक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास नहीं किया। इसके विपरीत, मराठों का वर्चस्व कम हो; इसलिए अब्दाली से हिंदुस्तान पर आक्रमण करने का आग्रह किया । वे ऐसी अपेक्षा करते थे कि अब्दाली मराठों को पराजित कर दक्षिण में नर्मदा पार खदेड़ देगा ।

अटक पर मराठों का झंडा लहराया : नजीब खान रुहेलों का सरदार था । उत्तर भारत में मराठों का प्रभाव उसे असह्य था । नजीब खान के कहने पर अब्दाली ने भारत पर दोबारा आक्रमण किया । भारत पर उसका यह पाँचवाँ आक्रमण था । उसने दिल्ली जीत ली और बड़ी लूटपाट कर वह अफगानिस्तान को लौट गया । रघुनाथराव और मल्हारराव पुनः उत्तर में गए । उन्होंने दिल्ली को अपने अधिकार में कर लिया और अब्दाली के सरदारों को खदेड़कर पंजाब को जीता । अब्दाली के सैनिकों का पीछा करते हुए मराठे ई.स.१७५८ में अटक तक पहुँच गए । अटक में मराठों का झंडा फहरा उठा । अटक यह स्थान वर्तमान पाकिस्तान में है। मराठों ने यह अभियान अटक के आगे पेशावर तक चलाया परंतु मराठे अपने अधिकारवाले प्रदेशों का उत्तम प्रबंध करने में सफल नहीं रहे ।

दत्ताजी का पराक्रम : पंजाब पर अपनी पकड़ मजबूत करने और नजीब खान का दमन करने के लिए पेशवा ने दत्ताजी शिंदे और जनकोजी शिंदे को उत्तर में भेजा । दत्ताजी उत्तर में गया । नजीब खान ने उसे बातचीत में उलझाए रखा और दूसरी ओर अब्दाली से सहायता करने की प्रार्थना की । यह संदेश मिलते ही अब्दाली ने फिर से भारत पर आक्रमण किया । यमुना तट के बुराड़ी घाट पर दत्ताजी और अब्दाली आमने-सामने आ गए । उनके बीच घमासान युद्ध हुआ । दत्ताजी ने असाधारण शौर्य की पराकाष्ठा की परंतु इस युद्ध में दत्ताजी को वीरगति प्राप्त हुई ।

क्या तुम जानते हो ?

दत्ताजी ने बड़े धैर्य और वीरता के साथ युद्ध किया लेकिन अंत में वह युद्ध भूमि पर घायल होकर गिर पड़ा । रुहेला नजीब खान का सलाहकार कुतुबशाह हाथी से उतरकर घायल दत्ताजी के पास आया और दत्ताजी से पूछा, ''क्यों पटेल जी, तुम हमारे साथ और भी लड़ोगे ?'' लहूलुहान दत्ताजी धरती पर पड़ा हुआ था लेकिन कुतुबशाह के इन शब्दों को सुनकर उसने बड़े स्वाभिमान से परिपूर्ण उत्तर दिया, ''हाँ, बचेंगे तो और भी लड़ेंगे ।''

सदाशिवरावभाऊ : नानासाहब ने अब्दाली का दमन करने के लिए अपने चचेरे भाई सदाशिवरावभाऊ और अपने बड़े बेटे विश्वासराव को उत्तर में भेजा। सदाशिवरावभाऊ चिमाजी अप्पा का बेटा था । उसके साथ विशाल सेना और शक्तिशाली तोपखाना था । इब्राहीम खान गारदी तोपखाने का प्रमुख था। इसी तोपखाने के बल पर उसने ई.स.१७६० में लातूर जिले के उदगीर की लड़ाई में निजाम को पराजित किया था।

सदाशिवरावभाऊ

पानीपत का युद्ध : उत्तर के इस अभियान में सदाशिवरावभाऊ ने दिल्ली जीत ली । इसके बाद

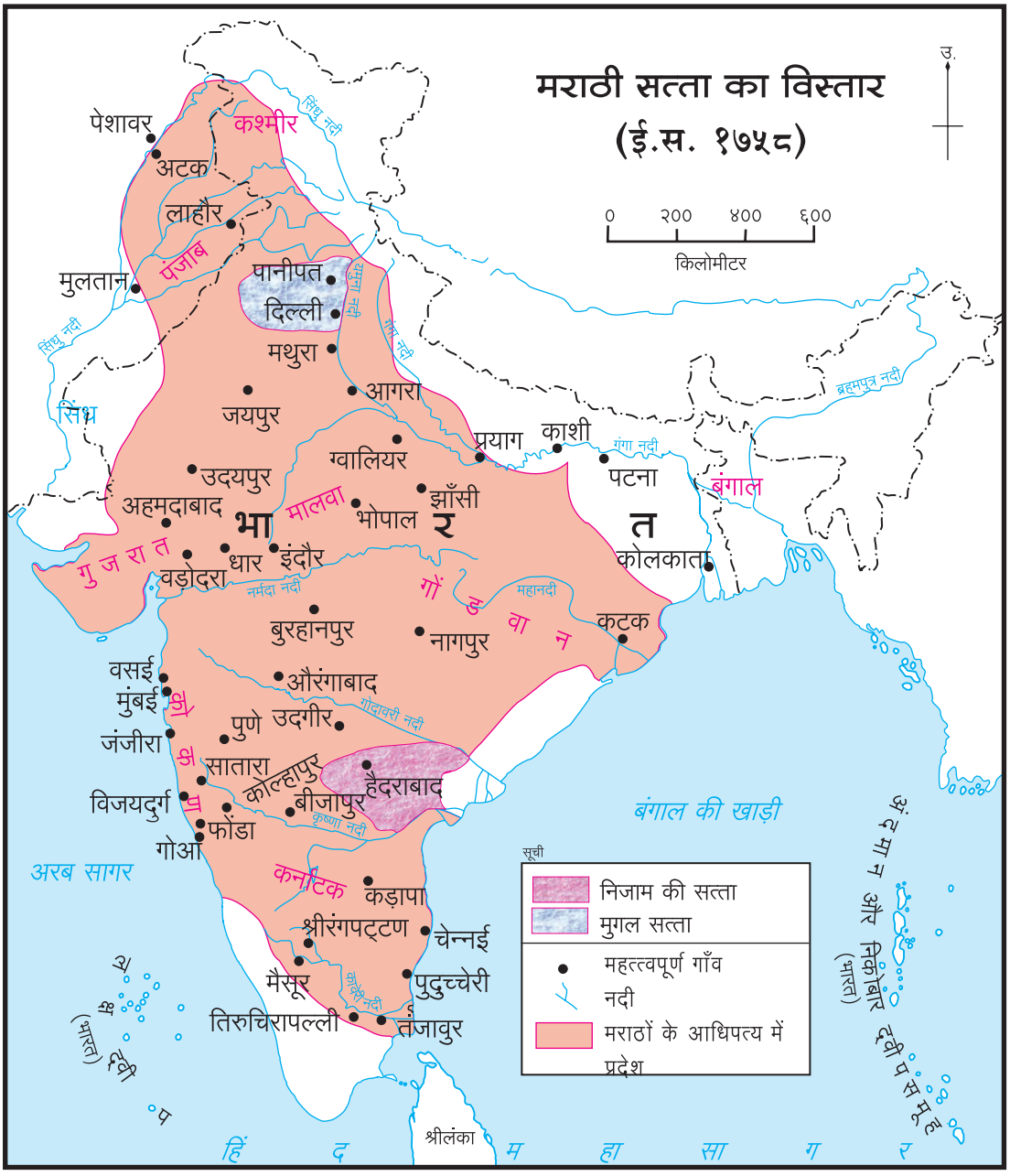

पानीपत में मराठों की सेना और अब्दाली की सेना आमने-सामने आ गई । ई.स.१४ जनवरी १७६१ को मराठों ने अब्दाली पर आक्रमण कर युद्ध को प्रारंभ किया । यह पानीपत का तीसरा युद्ध था । इस युद्ध में गोली लगने से विश्वासराव मारा गया । यह समाचार सदाशिवराभाऊ को प्राप्त होते ही वह क्रोध में पागल होकर शत्रु पर टूट पड़ा । इस घमासान युद्ध में वह दिखाई नहीं दे रहा था । यह देखकर कि हमारा नेता दिखाई नहीं दे रहा है; मराठी सेना का मनोबल गिर गया । उसी समय अब्दाली के आरक्षित और ताजा दम के सैनिकों ने मराठों पर आक्रमण किया । मराठों की पराजय हुई । इस युद्ध में महाराष्ट्र की एक संपूर्ण युवा पीढ़ी समाप्त हो गई । कई वीर-पराक्रमी सरदारों ने वीरगति पाई ।

क्या तुम जानते हो ?

पानीपत के युद्ध में लगभग डेढ़ लाख लोग मारे गए । एक पत्र में किया गया सांकेतिक वर्णन इस प्रकार है :

‘‘दोन मोत्ये गळाली. सत्तावीस मोहोरा हरवल्या ! आणि रूपये, खुर्दा किती गेल्या याची गणतीच नाही.’’

मराठों का मत था कि विदेशी अब्दाली को यहाँ शासन करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है; इस व्यापक उद्देश्य को ध्यान में रखकर मराठों ने अब्दाली से युद्ध किया । हम सभी भारतीय हैं और अब्दाली विदेशी शत्रु है; इस प्रकार का पत्र लिखकर सदाशिवरावभाऊ ने उत्तर के सभी सत्ताधीशों को मराठों की व्यापक और सर्वसमावेशक भूमिका से अवगत कराया था परंतु इस भूमिका को अनुकूल समर्थन उत्तर के सत्ताधीशों ने नहीं दिया और वे तटस्थ रहे। फलस्वरूप भारत की रक्षा का दायित्व अकेले मराठों पर आ गया । अतः यह कहा जा सकता है कि भारत एक देश है और उसका शासक किसी भी धर्म का हो; फिर भी सभी ने उसे समर्थन देना चाहिए; यह बोध इतिहास में सबसे पहले मराठों ने जगाया ।

पेशवा माधवराव : नानासाहब पेशवा की मृत्यु के पश्चात उनका बेटा माधवराव पेशवा पद पर बैठा। माधवराव ने अपने शासनकाल में निजाम और हैदरअली का बंदोबस्त किया । उसने उत्तर में मराठों का प्रभुत्व पुनः स्थापित किया ।

पेशवा माधवराव

पानीपत के युद्ध में मराठों की पराजय हुई थी; यह देखकर निजाम ने मराठों के विरोध में फिर से गतिविधियाँ प्रारंभ की । उसने मराठों के प्रदेश पर आक्रमण किए परंतु माधवराव ने निजाम को पैठण के समीप राक्षस भुवन नामक स्थान पर पराजित किया ।

हैदरअली मैसूर का सुल्तान था । पानीपत के युद्ध में हुई मराठों की हार देखकर उसने कर्नाटक में मराठों के प्रदेश पर हमले किए परंतु मराठों ने उसे श्रीरंगपट्टन के निकट मोती तालाब स्थान पर हुए युद्ध में हराया । तब हैदरअली ने मराठों को तुंगभद्रा नदी के उत्तर की ओर का प्रदेश देना स्वीकार किया ।

ई.स.१७७२ में माधवराव पेशवा की मृत्यु हुई। मराठों के इतिहास में माधवराव का उल्लेख निष्ठावान, परिश्रमी, संकल्पशील और लोकहितजागरूक शासक के रूप में किया जाता है। इस पराक्रमी पेशवा की मृत्यु से मराठी राज्य की बड़ी हानि हुई ।

क्या तुम जानते हो ?

पेशवा माधवराव ने किसानों के हितों की ओर विशेष ध्यान दिया । कुएँ खुदवाकर पुणे की जलापूर्ति में वृद्धि की । उसके कार्यकाल में नाना फड़नवीस जैसा प्रशासक तथा रामशास्त्री प्रभुणे जैसे महान न्यायाधीश हुए । न्याय व्यवस्था में सुधार किए जिससे प्रजा को न्याय मिले । तोपें और गोला-बारूद बनाने के कारखाने खोले । सिक्के ढालने के लिए टकसाल का प्रबंध किया।

पेशवा माधवराव के पश्चात नारायणराव और सवाई माधवराव गद्दी पर बैठे परंतु ये दोनों पेशवा अल्पायु रहे । इसके अलावा उनके शासनकाल में पेशवाई को गृहकलह ने ग्रस लिया । एक समय अटक के पार झंडा फहराने वाला रघुनाथराव सत्ता की लालसा में अंग्रेजों की शरण में चला गया । परिणामतः मराठे और अंग्रेजों के बीच युद्ध हुआ ।

ई.स.१७८२ में हैदरअली की मृत्यु हुई । उसके बाद उसका बेटा टीपू मैसूर का सुल्तान बना । वह निष्णात योद्धा होने के साथ-साथ विद्वान और कवि भी था । अपने पराक्रम से उसने अपने राज्य का प्रभाव बढ़ाया । उसने फ्रांसीसियों से मित्रता स्थापित कर अंग्रेजों के प्रभाव को आघात पहुँचाना प्रारंभ किया । ई.स.१७९९ में अंग्रेजों के विरुद्ध हुए युद्ध में वह मारा गया ।

मराठी सत्ता के प्रभाव की पुनःस्थापना : पानीपत युद्ध में हुई हार के कारण मराठों की उत्तर भारत में स्थापित प्रतिष्ठा पर जबर्दस्त आघात हुआ था । उत्तर में अपनी सत्ता को पुनः स्थापित करने के लिए माधवराव ने महादजी शिंदे, तुकोजी होलकर, रामचंद्र कानडे और विसाजी पंत बिनीवाले सरदारों को उत्तर में भेजा । मराठी सेना ने जाट, रुहेले और राजपूतों को पराजित किया । मुगल शासक शाहआलम को अपने संरक्षण में दिल्ली की गद्दी पर बैठाया । इस प्रकार उत्तर में फिर से मराठों की सत्ता स्थापित हुई ।

पानीपत के युद्ध में मराठों को प्रचंड हानि उठानी पड़ी थी । अब्दाली की सेना को भी क्षति पहुँची थी । पानीपत के युद्ध में विजय प्राप्त होने के बावजूद अब्दाली को बहुत बड़ा आर्थिक लाभ नहीं हुआ था । अतः उसने अथवा उसके उत्तराधिकारियों ने भारत पर फिर से आक्रमण करने का साहस नहीं किया । इसके उल्टे; उनके ध्यान में आ गया था कि उत्तर में निर्माण होने वाली अराजकता पर अंकुश रखने की सामर्थ्य मराठों में ही है । अतः उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि मुगल पातशाही का संरक्षण मराठे ही करें । मराठों के साथ मित्रता स्थापित करने के लिए उसने अपने दूत को भी पुणे भेजा था । पानीपत में हुई इतनी बड़ी पराजय को पचाकर उत्तर की राजनीति में फिर से स्वयं को स्थापित करने में मराठे सफल रहे; यह उल्लेखनीय तथ्य है । इसमें मल्हारराव होलकर, अहिल्याबाई होलकर और महादजी शिंदे का बहुत बड़ा योगदान रहा ।

पेशवा घराने की वंशावली

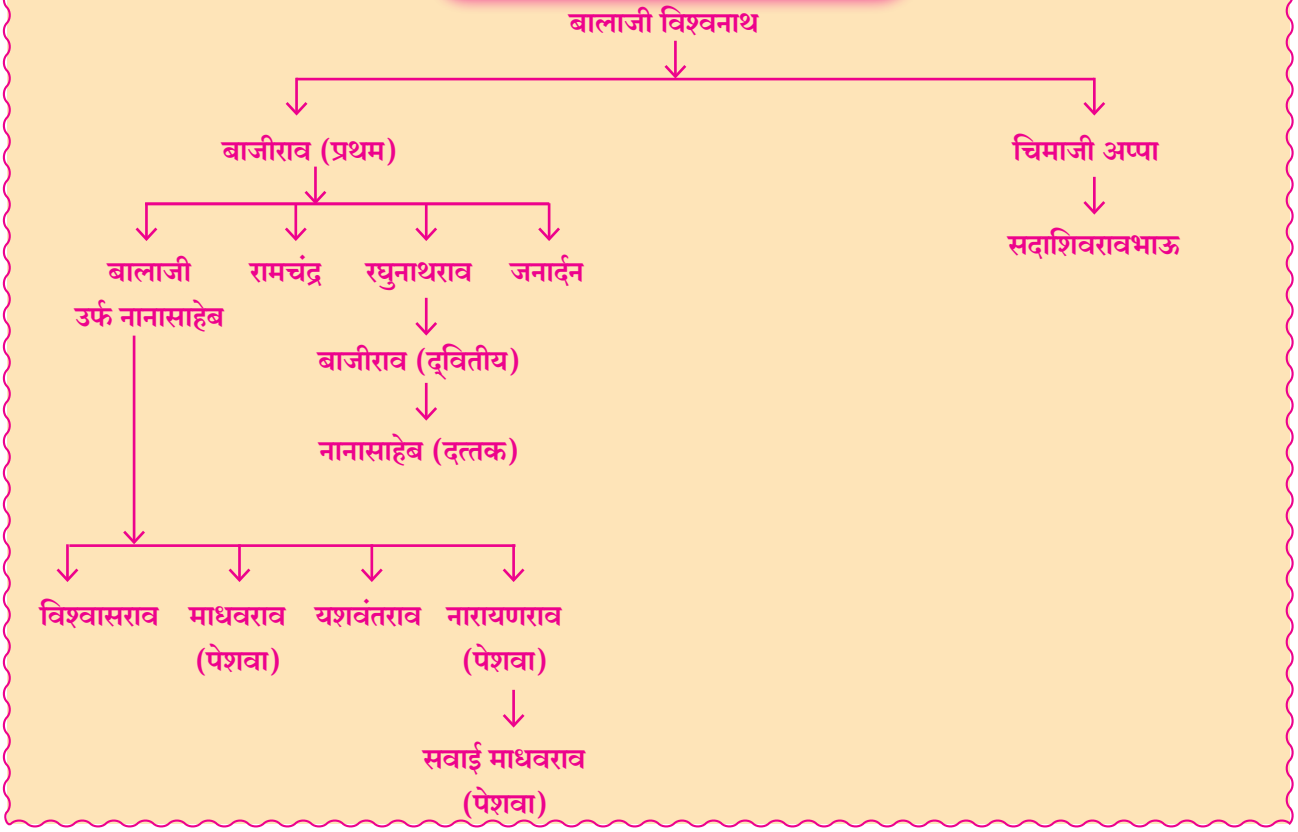

स्वाध्याय

१. कौन भला ?

(१) अफगानिस्तान से आए हुए ....
(२) हिमालय की तलहटी में स्थायी रूप में बसे हुए..
(३) नानासाहेब पेशवा का भाई ....
(४) मथुरा के जाटों का प्रमुख ....
(५) पैठण के समीप राक्षस भुवन नामक स्थान पर निजाम को पराजित करने वाला ....

२. संक्षेप में लिखो :

(१) अटक पर मराठों का झंडा फहरा उठा ।
(२) अफगानों के साथ संघर्ष ।
(३) पानीपत युद्ध के परिणाम ।

३. घटनाक्रम लगाओ :

(१) राक्षस भुवन का युद्ध
(२) टीपू सुल्तान की मृत्यु
(३) माधवराव पेशवा की मृत्यु
(४) पानीपत का युद्ध
(५) बुराड़ी घाट की लड़ाई

४. निम्न चौखट में पाठ में आए हुए व्यक्तियों के नाम ढूँढ़ो :

म	स	ह	ना	ज	न	को	जी
हा	ज	द	रा	ना	फ	म	त्ता
द	या	च	य	प	सा	थ	द
जी	प्पा	ल	ण	आ	रू	हे	प्र
बा	ला	जी	वि	श्व	ना	थ	ब
अ	व	ला	मा	ध	व	रा	व
स	दा	शि	व	रा	व	भा	ऊ
म	ल्हा	र	रा	व	क	चि	दे

उपक्रम

इंटरनेट (अंतरजाल) की सहायता से पानीपत युद्ध की जानकारी प्राप्त करो और कक्षा में प्रस्तुत करो ।

सवाई माधवराव पेशवा का दरबार